kary goshi (anya logon ka vichar) 2002_c

288

कार्य गोष्ठि (अन्य लोगों का विचार)

2002

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

17 जुलाई 2002

श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदांचल अमरकंटक

स्थल – मन्दिर के सामने धर्मशाला

कार्यगोष्ठी में भागीदारी

① स्वश्री सन्दीप पाण्डेय

A/893 इन्दिरा नगर, लखनऊ

दूरभाष – 0522-347365

'आशा' संस्था

② विवेक उमराव, संस्था – आशा

127/612A 'S' ब्लाक

जूही बस डिपो चौराहा के निकट

विनोबा नगर

कानपुर – 208014

उ०प्र०

③ श्र० नागराज, प्रणेता – मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद

भजनाश्रम, नर्मदांचल, अमरकंटक।

कार्य

कार्यगोष्ठी का मूलबिन्दु –

समाधान / समस्या

1. समस्या का कारण बिन्दु –

1. सुविधा संग्रह

2. द्रोह, विद्रोह, आतंक, युद्ध, शासन

3. सम्प्रदाय

4. प्रदूषण (विज्ञान व प्रौद्योगिकी के द्वारा)

समाधान / समस्या का स्रोत – शिक्षा

शिक्षा में समाधान परम्परा को पहचानना

- अभी तक दो प्रकार के दृष्टिकोण पर शिक्षा हुयी – (स्थापित)

1. रहस्यमूलक ईश्वर केन्द्रित चिन्तन, ज्ञान, विवेक, विज्ञान

2. अस्थिरता, अनिश्चितता मूलक वस्तु केन्द्रित चिन्तन, ज्ञान, (विज्ञान) विवेक

यदि दोनों से समाधान नहीं मिलता है तब तीसरा विश्व दृष्टिकोण –

– अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन, ज्ञान, (विज्ञान) विवेक (सह अस्तित्व मूलक)

ज्ञान – सहअस्तित्व विधि से दर्शन ज्ञान, सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति के रूप में।

जीवन ज्ञान – चैतन्य प्रकृति के रूप में।

मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान – मानवत्व के रूप में।

ऐसे ही ज्ञान के आधार पर विज्ञान मानव लक्ष्य को दिशा निर्धारण की क्रिया-प्रतिक्रिया के रूप में।

विवेक – मानव लक्ष्य को जीवन क्रिया, रासायनिक क्रिया, भौतिक क्रिया के संयुक्त उद्देश्य के रूप में।

मानव में मानवत्व होता ही है।

समझदारी → ईमानदारी → जिम्मेदारी → भागीदारी (मानव का मूल रूप)

विवेक, विज्ञान मानव लक्ष्य के लिये संयुक्त/सम्मति में आते हैं → समाधान
दिशा निर्धारण का योग फलन →

समाधान → सुख
समस्या → दुख

मनुष्य दुख को अस्वीकारता है, सुख को स्वीकारता है।

जिम्मेदारी – भागीदारी →

सम्बन्धों के प्रति जिम्मेदारी –

1. जीवन व शरीर का संबंध
2. परिवार संबंध
3. ग्राम परिवार से विश्वपरिवार का संबंध

संबंध की निरन्तरता को बनाये रखना विश्वास है। विश्वास आधारमूल्य है सभी संबंध इससे जुड़े ही रहते हैं; यह साम्य मूल्य है।

परिवार व्यवस्था संबंध –

विश्व परिवार व्यवस्था संबंध

ऐसे संबंधो में स्वेच्छापूर्ण, स्वयंस्फूर्त, उत्साह से निर्वाह करना ही भागीदारी है। इसी में शिक्षा संबंध, स्वास्थ्य संबंध, उत्पादन कार्य संबंध, विनिमय कार्य संबंध निहित रहता है, इसी क्रम में सर्वमानव लक्ष्य समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व का प्रमाण, यही मानव लक्ष्य का फलन है।

मूल से फल तक विवेक विज्ञान सहित संबंधो का पहचान / मूल्यों का निर्वाह करने के बारे में विविध कार्यक्रमों को कैसे पहचाना जाये? पहचानना जरूरी है या नहीं?

management   Union
प्रबंधन व संघ, संगठन का क्या संबंध है? इसका क्या समाधान है।
सबको समझदार बनाया जाये, स्वमूल्यांकन के योग्य बनाया जाये।

सम्पूर्ण सिद्धान्त → समझ → समझ के आधार पर जीना → व्यवहार
सैद्धान्तिकता → व्यवहारिकता → जीकर प्रमाणित करना → मानव लक्ष्य पूरा होना

कार्यक्रम

परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था कार्यक्रम – जिसमे मानवीय शिक्षा संस्कार कार्यक्रम, न्याय-सुरक्षा कार्यक्रम, उत्पादन कार्यक्रम और उपक्रम, विनिमय-कोष कार्यक्रम उपक्रम, स्वास्थ्य-संयम कार्यक्रम और उपक्रम।

इन पांचो कार्यक्रमों मे से कम से कम तीन में प्रमाणित होना है।

व्यक्ति - समझदारी

परिवार - समाधान, समृद्धि

समाज - समाधान, समृद्धि, अभय

व्यवस्था - समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व

समाधान = सुख

समाधान, समृद्धि = शान्ति

समाधान, समृद्धि, अभय (वर्तमानमे विश्वास) = संतोष

समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व का प्रमाण = आनन्द

सुख की कल्पना, कामना, विचार, इच्छा → शोध → संकल्प और प्रमाण → प्रयोग।

प्रबोधन – पारंगत हैं → जीते हैं → पारंगतता का बोध करा पाते हैं।

18 जुलाई 2002.

समुद्र
जल
वायु
सूर्य ऊर्जा, को ऊर्जा स्रोतों के रूप में प्रयोग हो|

किसानों के पास यदि 10 एकड़ जमीन है तो उसमें 1 एकड़ में जंगल तथा 1 एकड़ में तालाब (पानी के जमाव) आदि बनायें शेष 8 एकड़ में कृषि हो| मवेशी भी पालें|

[ग्रेन संतुलन
जल~~स्तर~~ संतुलन
ऊर्जा संतुलन]
में शोध कार्य हो| इसके संदर्भ में कार्यक्रम बनाकर संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) के समक्ष प्रस्तुत किया जाये|

ऐसे पादप उगाये जायें जो कि CO को CO_2 परिवर्तित करते है, जैसे भिलवाँ का पेड़| फिर जंगल विकसित किये जायें|

कोयला, पेट्रोलियम उन पादपों से बना है जो कि CO खाते हैं इसीलिये जलने के पश्चात यह CO बनाते हैं|.

चिन्तन/दर्शन/शास्त्र/योजना से प्रबोधकों का ~~उत्साह~~ संबंध नहीं है वरन् जीवन विद्या में समावेशित उत्साह से उत्साहित है

18-7-2002

अमर कन्टक
(श्री भजनाश्रम)

15 जुलाई सांयकाल मे श्री विवेक उमराव यहाँ पहुँचा। इनका यहाँ प्रथम प्रवास था। आने के कुछ क्षण उपरान्त यह पता लगा कि आप मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववादी) नजरिया मे स्थिर अवधारणा और ज्ञान अर्जन करने के लिए प्रस्तुत हैं।

आप 23 वर्ष आयु के बी. टेक के चतुर्थ वर्ष में अध्ययन करते हुए काफी दार्शनिक ऐतिहासिक वैज्ञानिक किताबों का अध्ययन करने के उपरान्त सार्थकता का शोध करने की क्रम मे डा० संदीप पांडे और गणेश बागड़िया जी के सम्पर्क मे पहुँचे।

इनकी जिज्ञासा के अनुसार 'जीवन-विद्या' का भनक पड़ी। इनके सहयोगी के रूप मे, कुमार संभव, दीपक और इनके सभी सहयोगी इनके लिए सूचना के रूप में प्रस्तुत होते रहे। विवेक अपने क्रम मे अर्थ संगत विधि से सब को जाँचते रहे। अन्ततोगत्वा आपकी इच्छा यह हुई कि अमरकन्टक

में एक बार पहुंचकर जिज्ञासा को शांत करके वह अपने आप में विचारशील होने का परिचय एक स्वस्थ व्यवस्था होने की आशा और अपेक्षा को व्यक्त किए। आपके अनुसार आवश्यकता से अधिक सभी वस्तुओं को जिनको आवश्यकता है उनको अपनी मन इच्छा अनुसार ले जाने की छूट रहनी चाहिए। इसमें कोई नियंत्रण की आवश्यकता नहीं है।
इसको एक उदाहरण के रूप वैचारिक विधि से मैंने प्रस्तुत किया कि हमारे पास 1000) रु० से अधिक है उसे सड़क पर रख देते हैं, उसको आवश्यकतानुसार ले जाने वाला क्या कोई मिलेगा भी? इसे परीक्षण करके देखा जा सकता है। अन्ततोगत्वा ऐसी परिकल्पना अव्यवहारिक है। अर्थात् अव्यवस्था द्योतक है।

इसके उपरान्त सहअस्तित्ववादी विधि से विनिमय कार्य को समझाया।

(1) प्राकृतिक ऐश्वर्य का मूल्य शून्य

(2) मनुष्य अपने श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता मूल्य / कला मूल्य को स्थापित करता है।

(3) उपयोगिता मूल्य के आधार पर श्रम मूल्य का निर्धारण हो जाता है। इस श्रम नियोजन श्रम प्रणाली मानव कुल के लिए आवश्यक है। इस विचार में आप सहमत हुए और अध्ययन के लिए तैयार हुए। रात्रि में विश्राम किया।

8.16 स्वामी विवेकानंद ने अपनी जिज्ञासा व्यक्त किया कि, विद्या रूपी अराजकता को कैसे रोका जावे?

सापेक्षवाद के स्थान पर सहअस्तित्ववाद

ब्रह्माण्डीय रचना-सिद्धान्त में भौतिक-रासायनिक क्रिया का उपयोगिता-पूरकता-सिद्धान्त

अस्तित्व में विकास क्रम विकास, जागृति क्रम जागृति, नित्य वर्तमान है।

इन चारों सिद्धान्तों को हृदयंगम करने की आवश्यकता है।

16-7-2002

विवेक ~~अपनी~~ व्यवस्था के बारे में अपनी जिज्ञासा को व्यक्त किया। उनको परिवार मूलक स्वराज्य की व्यवस्था को दस सोपानी विधि से समझाया जिसमें निर्वाचन के लिए पैसा, वाहन, और कागज की बर्बादी के बिना ही जनप्रतिनिधि का पहचान होने के मुद्दे पर रोमांचित हुए।

विवेक अपनी जिज्ञासा को दूसरी वेला में जीवन, जीवन का स्वरूप, जीवन का कार्य और जीवन के लक्ष्य को समझने का आशय व्यक्त किया। इसी के साथ स्त्री-पुरुष की समानता को पहचाना कैसे जाय ? इस मुद्दे पर स्त्री-पुरुषों की समानता का आधार जीवन है न कि शरीर।

जीवन अपनी ~~स्वरूप के~~ गठनपूर्णता के स्वरूप में समान है। जागृति में समान है, सुख में समान है, लक्ष्य में समान है, क्रिया रूप में समान है। शरीर में असमानता है ही।

जीवन-लक्ष्य अपने आप में सुख, शांति संतोष आनन्द है। ~~यही~~ यह मानव परंपरा में

//

मानव लक्ष्य के साथ ही प्रमाणित हो पाता है। मानव लक्ष्य को समाधान समृद्धि अभय और सह-अस्तित्व के रूप में पहचानना आवश्यक है। यह जागृति का रूप है।

समाधान = सुख। समाधान समृद्धि = शांति
समाधान, समृद्धि, अभय = संतोष। समाधान, समृद्धि, अभय सह-अस्तित्व सहज प्रमाण = आनन्द होना पहचाना गया है। रात्रि विश्राम ——

18-7-2002 18 तारीख को आज संदीप पांडे प्रातःकाल यहाँ पहुँचे। पांडे जी के साथ जो कार्य गोष्ठी हुई है। उसे लिख चुके हैं।

2002
15- अगस्त के पूर्व सन्ध्या मे भारत देश के
राष्ट्रपति कलाम का ~~सन~~ सन्देश मे 2002
16-8-

और
① लेकिन संगठन व दृष्टि से महत्व पूर्ण हैं
राष्ट्र के प्रति निष्ठा ~~सर्वोपरि~~ ~~राष्ट्र~~ धर्म निरपेक्षता ~~होना~~
अवश्यक है।
राष्ट्र आधार ~~के~~ आधार है

राष्ट्र का मतलब देखने जाएँ संविधान ही ~~किसी~~ है। इसी
संविधान के आधार पर जीया जाए (जीने का) यह संदेश पहुँचती है। संविधान
का महत्वपूर्ण कार्य गलतियों को रोकना, अपराध को दंड देना। युद्ध
को युद्ध से अथवा राजनीतिक ~~कारो~~ विधि से रोकना (इसे शस्त्र के निषेध शस्त्र)। इसी के साथ
यह भी संविधान में प्रावधान है संस्कृति को बनाए रखना (इसमें संविधान
की भाषा को लिखना है) तब धर्म निरपेक्षता कैसा हो?
अनेक सम्प्रदाय धर्म निरपेक्षता का नाम लेने के उपरान्त अनेक जाति
अनेक पंथ ~~अनेक धर्म~~ अपने-2 संस्कृति को बनाए रखते हुए
धर्म निरपेक्षता कैसे है? पचास वर्ष से
सर्वधर्मसमभाव गाँधीजी के समय से अबतक
यह देखा गया मस्जिद में कोई हिन्दु जाने से, मंदिर में
कोई मुसलमान जाने से, गिरजाघर में दोनों जाने से और
परस्पर सुख-दुखों में वे परस्पर प्रस्तुत होने पर ~~सर्व~~
~~धर्म~~ ~~समभाव~~ ~~हो~~ ~~सकती~~ ~~है~~ व्यक्तिगत सद्भावना, उदारता
विधि से यही किया जा सकती है। क्या इससे सर्वधर्म
सद्भावना हो सकती है?

* क्योंकि मानव परंपरा, सम्पूर्ण 20वीं शताब्दी तक रहस्यमयी अध्यात्मवाद / आदर्शवाद को अपनाए आए रहे। इसका अंतिम सोपान मार्क्स-त्रिरक्ति के रूप में व्याख्यायित हुई। कालान्तर में भौतिकवाद अथवा विज्ञानवाद तर्कसंगत विधि से अस्थिरता-अनिश्चयता मूलक वस्तुकेन्द्रित चिन्तन के रूप में प्रस्तुत रही। इसका अंतिम सोपान डार्विन-सिद्धांत के रूप में जब मानव ने पकड़ी जो सम्पूर्ण संघर्ष का कारण है। मैं अस्तित्व रूपक मानवीय चिंतन विधि → समानता को आधार मान इसे समझने की आवश्यकता रही। समानता के मूल में धर्म के नाम पर बनी हुई अनेक सम्प्रदाय के स्थान पर मूलतः धर्म को पहचानने की आवश्यकता रही। ये दोनों मानव परंपरा में नहीं रहीं। इसकी जिज्ञासा सतत रही।*

21 शताब्दी तक हमें मानव धर्म को पहचान लिया, समझ लिया, जीकर प्रमाणित कर देखा। यह समझ में आने के उपरान्त है सर्वमानव में समानता का सूत्र मानवीयता का सूत्र व्याख्या के रूप में हमें लगी। इन्हीं के आधार पर मानवीय आचरण, मानवीय संविधान, मानवीय व्यवस्था, मानव समाज को अखण्डता, सार्वभौमता के रूप में पहचान लिया है। इसे लोकव्यापीकरण विधि से शिक्षा परंपरा में प्रमाणित करने की आवश्यकता, महसूस कर रहा हूँ। जिससे ही समृद्धता, अखण्डता, जन-जन में प्रमाणित होने की संभावना है।

आपके अपार स्नेह उपकार से पुनर्जन्म के उपरान्त मैं आनन्द की स्वयं स्फूर्त विधि से आपके सम्मुख होने तक को प्रस्तुत हो रहा हूँ। इसको आपके [illegible] रूप में [illegible] की आवश्यकता, महसूस करता हूँ

मानव को सुख; ... आनंद को चाहने वाला होना पहचान लिया। यही मानव धर्म है। इसका सहज सिद्धि की जिम्मेदारी से समाधान, (सह-अस्तित्व को समझने से समाधान) फलस्वरूप सुख। समाधान-समृद्धि सिद्धि से सुख शांति; समाधान, समृद्धि अभयता एवं जीने से सुख [अखण्ड समाज सिद्धि से] सुख शांति संतोष ~~...~~, समाधान ... सह-अस्तित्व एवं ~~जीने से सुख, शांति ... आनन्द होना पाया गया।~~

अतएव आपके अनुकूल जमाने से कुछ समय लेकर ~~इसे~~ कर इसे संशोधित करें ताकि ~~हम पहुंचाकर ... पराभव~~ देश-धरती का उपकार मार्ग सुगम होगा।

शिक्षा का मानवीकरण में मानवीयतापूर्ण आचरण को मूल्य, चरित्र, नैतिकता के रूप में पहचाना गया है। मूल्य को सम्बन्धों में पहचान, उसकी निरंतरता को बनाए रखने के रूप में विश्वास, परस्पर मूल्यांकन, उभयतृप्ति की गति तक बनती है।

चरित्र को स्वधन, स्वनारी, ... सर्व व्यवहार के रूप में पहचाना गया है। यह मानव में स्वीकृत होता है। यह अध्ययन सुलभ होने की व्यवस्था है।

नैतिकता को ~~...~~ हर व्यक्ति परिवार में प्राप्त तन मन धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा के रूप में पहचाना गया है। इसका क्र- व्यवस्था अध्ययन सुलभ हो जाता है। सह-अस्तित्व में ही ऐसे अध्ययन के मूल में, जीवन विद्या विधि को पहचाना गया है। ~~... पहचान~~

साथ को जानने मानने की विधि से सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान रूपी ज्ञान

मानवीयता पूर्ण आचरण रूपी मानवत्व का ज्ञान।
अध्ययन पूर्वक — हो जाता है इसी क्रम में यह भी
जानना - - - - - मानवीयता अनुभव
हो जाता है कि यह - भौतिकता रूपी भौतिकता
भौतिक क्रिया, रासायनिक क्रिया और
जीवन क्रियायें सम्पूर्ण क्रिया है।
भौतिक-रासायनिक क्रियायें जीवनगत तक
प्रभाव शील हो जीवन क्रिया ज्ञानावस्था अध्ययन
करने योग्य बनाई है क्योंकि मानव ही ज्ञानावस्था-
में का इस मनुष्य जाति पर्यन्त भी होता है।

कैंडिल, संगठन,
से धर्म निरपेक्षता राष्ट्रीयता व भारत देश में सार्थक होने का कामना
अभिभावकों सुनने के उपरान्त
~~सायम स्फूर्त निष्पक्ष~~
~~स्वयम स्फूर्त लिखित से~~ प्रमाणित रखने के लिये प्रेरित हुवे

अभिभावकों में
राष्ट्र के प्रति निष्ठा धर्म निरपेक्षता को ~~अवश्यकता~~ देशवासियों से अपेक्षा किये है यह स्वागतीय है।
राष्ट्रीय चरित्र धर्म निरपेक्षता पूर्ण आचरण को शिक्षा संस्कार परंपरा में व्यवस्था परंपरा में और संविधान में सुनिश्चितता होना होना ही सभी समस्या ~~का कारण~~ है

उक्त मूल समस्या ~~का~~ औ समाधान विकल्प-प्रासवर्ओं से ~~अनुसंधान~~
अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिन्तना ~~[illegible]~~ रूपी के आधार पर ज्ञान विज्ञान विवेक सम्पन्नता जिम्मेदारी भागीदारी पूर्वक मानव संस्कृति सभ्यता विधि व्यवस्था में से कोई भी मानव पारंगत हो सकता है
प्रमाणित हो सकता क्योंकि मैं स्वयम् पारंगत व प्रमाणित हूँ जिससे राष्ट्रीयता अखण्ड समाज के रूप में धर्म निरपेक्षता

सफल होना सहज है
अस्तु राष्ट्रीय चरित्र धर्म निरपेक्ष
ज्ञानपूर्ण आचरण को शिक्षा व व्यवस्था
पूर्वक क्रियान्वयन करने के पक्ष में
आपसे परामर्श करना चाहता हूँ आप
अपने अमूल्य समय में से कुछ समय को
निर्धारित कर सूचित करें उपकार होगा।

फोन : 284235.
सुरेन्द्र पाठक - भोपाल.
E 5/189 अरेरा कालोनी
भोपाल.

12 सितम्बर, 2002
गुरुवार

मैंने मानव व्यवहार दर्शन जो पुनः छपने वाला है, उसका प्रूफ देखा। दिनाँक 10 सितम्बर 2002 को अमरकंटक पहुँचा। इस दर्शन विचार को गहराई से अध्ययन करने की इच्छा भी समाई है क्योंकि मैं पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल की अनुमति से पत्रकारों को समाचारों की प्रस्तुति के रूप में घटनाओं को अभिव्यक्ति तथा पत्रकारिता शिक्षा की विषय-वस्तु, उसकी विषय-वस्तु का उद्देश्य एवं पत्रकारिता में मूल्यों का ध्रुवीकरण कैसे हो यह भी समझने की इच्छा थी। पत्रकारिता में अभी घटनाओं को मुख्य रूप से अपराध, गलती या अनियमितताओं के चित्रण के रूप में लोगों के सम्मुख सूचना के रूप में रखा जाता है। मुझे पत्रकारिता विश्वविद्यालय में पत्रकारों एवं विद्यार्थियों को मूल्य शिक्षा तथा पत्रकारिता की विषय-वस्तु उद्देश्य के ध्रुवीकरण पर एक लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत करना है अतः अमरकंटक आते समय इस पर विस्तृत गोष्ठी की इच्छा भी थी। गोष्ठी में निम्नाँनुसार पहला बिंदु था।

(1) अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित सह-अस्तित्ववाद जिसका आप अध्ययन किये हैं वह ऊपर कहे गये आशय को पूरा करने में कहाँ तक पर्याप्त है ?

अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित सह-अस्तित्ववाद के अध्ययन मनन के बाद मैंने पाया है कि मानव के सम्पूर्ण अध्ययन और सह-अस्तित्ववाद को समझने के बाद मानवीय लक्ष्य, मानवीय आकांक्षाओं और मानवीयता पूर्ण आचरण का न केवल ध्रुवीकरण होता है वरन उसका सार्वभौमिक स्वरूप सामने आता है, पत्रकारिता महज अपराध, गलती आदि की सूचना देने के माध्यम के बजाय मानवीय समस्याओं के ज्ञान-विज्ञान और विवेक पूर्वक अध्ययन से समाधान प्रस्तुत करने का साधन भी बन सकती है, जिससे पत्रकारिता के विषय-वस्तु का निर्धारण एवं पत्रकारिता के लक्ष्यों का ध्रुवीकरण तथा सार्वभौमीकरण भी सम्भव है।

मैं सागर विश्व-विद्यालय से "हिन्दी पत्रकारिता की भाषा की अर्थ सम्प्रेषण क्षमता" शीर्षक पर शोध

भाषा विज्ञान विभाग में कर रहा हूँ। मानव व्यवहार दर्शन के अध्ययन एवं गहन अध्ययन मनन के उपरांत शब्दों की अर्थ सम्प्रेषण क्षमता को समझने का अवसर मिला। पत्रकारिता में प्रचलित शब्द तेजी से अर्थ खो रहे हैं तथा अनेक शब्द पूर्व से ही अपरिभाषित हैं। मानव व्यवहार दर्शन में शब्दों को अर्थ के सम्प्रेषित करने के लिये परिभाषित किया गया है, जिससे शब्दों को समझने और उनके अर्थ समझने का अवसर भी आपके सान्निध्य में मिला।

2. आपको क्या विश्वास होता है जो यह विचारधारा चिंतन, शास्त्र जो भी मानव के सम्मुख प्रस्तुत किये हैं इससे मानवीय शिक्षा अथवा शिक्षा का मानवीय करण और व्यवस्था का मानवीय करण और संविधान का मानवीय करण संभव है कि नहीं है।?

– पूरी उम्मीद बंधती है इसका कारण निम्नलिखित है।

1. अभी तक सामाजिक शोध "Social research" में मानव के आचरण का सार्वभौमिकता नहीं पहचाना गया है। आपके अध्ययन-चिंतन में सम्पूर्ण मानवीय आचरण की सार्वभौमिकता भी पहचान है। अतः यह परम्परा में आयेगा ही।

2. सह-अस्तित्व का भी पहचान विज्ञान और अध्यात्म परम्परा में नहीं आया है। सह-अस्तित्व का पहचान हुये बिना अखण्ड समाज, मानवीय संविधान और सार्वभौम व्यवस्था की आवश्यकता बनती ही नहीं है। सह-अस्तित्व प्रमाणित होने से उपरोक्त तीनों की परम्परा बना स्वभाविक क्रिया है।

भजनाश्रम अमरकंटक 19-1-03

श्री नर्मदा मंदिर के सामने धर्मशाला
समय - लगभग 12 बजे दिन

श्री दिनेश उपाध्याय
श्री संजय वर्मा, दोनों व्यक्ति रायपुर से उपस्थित हुए।

(1) आप दोनों विद्वान हर्बल युनिवर्सिटी की रूपरेखा और कार्यक्रमों के बारे में सोचना शुरू कर दिये हैं।

(2) जमीन के बारे में अभी निश्चय नहीं हुआ है। किसी किराये के मकान से पहचान शुरू करने की योजना है वह कार्यालय के रूप में स्वीकार रहे हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य शासन से जमीन के बारे में बातचीत करने का संकल्प है। और भी जिसके पास बहुत सी जमीन है, उनसे भी बातचीत करने का निश्चयन है।

(3) हम हर्बल यूनिवर्सिटी में निम्नलिखित लक्ष्य रखना चाहते हैं -

(i) हर व्यक्ति को स्वास्थ्य संयम कार्यक्रम में पारंगत करना है। इसके लिये मानवीय शिक्षा संस्कार को प्रावधानित करना है, जिससे पारंगत होने का प्रमाण हो।

छत्तीसगढ़ अंचल में वनस्थ वनस्पतियों को

परीक्षण, निरीक्षण युक्ति औषधियों का निश्चयन करना। मानव शरीर उपयोगी, जीव शरीर उपयोगी रूप में पहचान करना। इस कार्य को संपादित करने के लिये पारंगत व्यक्तियों को तैयार करना व उपयोग करना।

औषधि निर्माण में स्थानीय व्यक्तियों को पारंगत बनाना और उपयोग करना।

(ii) जिन औषधियों को उगाने की आवश्यकता बन चुकी है, उन सबकी पहचान करना और उपजाने का कार्यक्रम करना।

(iii) इस कार्यक्रम के तहत यह प्रावधानित रहेगा - असाध्य रोगियों की चिकित्सा देना।

(iv) मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था सम्मत संस्कारित विद्यार्थियों को तैयार करना।

इकाई युनिवर्सिटी का प्रस्ताव सुरेश एजुकेशनल सोसायटी द्वारा रखा गया, जिसे राज्य शासन छत्तीसगढ़ से स्वीकृति मिली। ऐसे जिम्मेदार व्यक्तियों के बीच में ऊपर कहे गये लक्ष्य, कार्यक्रम, रूपरेखा के बारे में परामर्श किया जाये। स्वीकृत होने की स्थिति में (इसको संचालित करने के लिये)

अभिव्यक्ति के रूप रेखा को साकार करने के लिए एक वाइस चांसलर का पहचान आवश्यक है। उसको तय किया जाये। उसके बाद समिति के विद्वान स्वयं उपर कहे मानवीय शिक्षा संस्कार संबंधी प्रस्ताव पर ध्यान देकर पारंगत होने का प्रमाण प्रस्तुत करें- जिससे विश्वविद्यालय में होने वाली गतिविधियों के प्रति मूल्यांकन हो सके।

कु. सरोज सिंह
12-11-02

कार्य गोष्ठी
स्थान सौभाग्य सदन
वैशाली नगर - भिलाई

परम आदरणीय श्री ए. नागराज बाबा जी
के साथ — सरोज सिंह

मानव का उदय शुभ के अर्थ में ही है। हर व्यक्ति शुभ स्वरूप समाधान सम्पन्न है। सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता के लिये मानव 'अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन', ज्ञान-विज्ञान-विवेक सम्पन्न होने की आवश्यकता है। इस सम्पन्न करने के लिये 'मध्यस्थ दर्शन' 'सह अस्तित्व ~~वाद~~ 'मानव केन्द्रित चिन्तन सक्षम है। भौतिक वादी विचार एवं ईश्वर वादी विचार मानव को स्वयं के अध्ययन के लिये प्रावधानित नही कर पाया। सह-अस्तित्व वाद से बहुत सारे लोग स्वयं के अध्ययन करने लायक हो गये या प्रवृत्त हो गये हैं।

प्र० क्या स्वयं का अध्ययन होना चाहिए

उ० उत्तर है "हाँ"

बहुजन मानस दूसरे पक्ष में हैं।

प्र० अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन क्या है?

30 (I) होने का अध्ययन :-

होना ही अध्ययन का सम्पूर्ण स्रोत है। इसका मूल रूप स्वयं का होना। हर मानव अपने को होना स्वीकारता है। यही अध्ययन का मूल ~~स्रोत~~ सूत्र है।

(II) स्वयं के अध्ययन के लिये सम्पूर्ण का अध्ययन आवश्यक है :-

सत्ता – (व्यापक वस्तु में) सम्पृक्त सम्पूर्ण प्रकृति (सम्पूर्ण - एक-एक) चाहे छोटा से छोटा हो या बड़े से बड़ा हो सभी सम्पृक्त है। सम्पृक्त रहने का तात्पर्य है डूबे रहना, घिरा रहना, भीगे रहने में ऊर्जा सम्पन्नता, बल सम्पन्नता। ऊर्जा सम्पन्नता = बल सम्पन्नता = चुम्बकीय बल सम्पन्नता = क्रियाशीलता

क्रियाशीलता के फलन में

विकास-क्रम, विकास जागृति-क्रम, जागृति प्रमाणित होती है।

ऊर्जा सम्पन्नता वश ही एक दूसरे को पहिचानने की व्यवस्था है। इसके मूल में प्रत्येक एक अपने प्रतिबिम्ब रूपी पहिचान बनाये रहता है। हर वस्तु का प्रतिबिंब बनाये रहता है। इस आधार पर एक दूसरे को पहचाने का आधार बनता है।

यही :— "गठन पूर्णता के रूप में जीवन तंत्र ~~का प्रमाण~~ परिणाम अमरत्व, श्रम का विश्राम मानव व मानव परंपरा में ही प्रमाणित होना, गति का गंतव्य जागृति का प्रमाण।

सह अस्तित्व में अनुभव ही जागृति, जीवन-क्रियाओं का अनुभव ही मूल्य है। मानव अपनी परस्परता में पहिचान कर पाना ही सम्बन्ध है।

<u>संबंध की परिभाषा</u> : पूर्णता के अर्थ में अनुबंध

का तात्पर्य प्रतिज्ञा। प्रतिज्ञा का तात्पर्य निष्ठा पूर्वक निर्वाह करना अथवा निर्वाह निरन्तरता। सह अस्तित्व नित्य प्रभावी है। इसी आधार पर हम जिन संबंधों को पहिचान लेते हैं उसमे निहित मूल्य स्वयं स्फूर्त विधि से निर्वाह हो गया। प्रचलन मे संबंध का नाम है ही। उसी के अनुसार हम पहिचान कर लेने के उपरान्त तुरन्त मूल्य निर्वाह होना शुरु हो जाता है। इस आधार पर संबंधों के साथ ही मूल्य निहित रहता है।

— o —

Continued —

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

कार्य गोष्ठी 12-11-02
अध्ययन

वैशाली नगर :-

सबंधो की निरन्तरता

संबंध की निरन्तरता शरीर यात्रा पर्यन्त होना आवश्यक है। संबंध मे यदि निरन्तरता नही होती है तो यह भ्रम कहलाता है। भ्रमवश संबंध की निरन्तरता का विच्छेद करता है।

भ्रम कैसे?

संवेदनशीलता को जीवन मानने से संवेदन शीलता शब्द, स्पर्श, रूप, गंध, रस में इसी क्रिया को "जीवन" मान लेने मात्र से शरीर को जीवन मान लेना बन जाता है भ्रमित होता है। दूसरा निराकरण संबंधो का प्रयोजन को समझते हुए संबंधो की पहिचान करना और उसमें पारंगत बनाने की व्यवस्था सह अस्तित्व विधि से है।

सभी संबंधो का प्रयोजन परस्परता में व्यवस्था पूर्वक जीने में है क्योंकि

हर इकाई की हर अवस्था यथास्थिति त्व से प्रमाणित होती है। लौह मे लौहत्व, गाय में गायत्व, मानव मे मानवत्व का प्रमाण हर संबंधो में प्रमाणित होना ही मूल्यों का निर्वाह करने के मतलब से है। मानवत्व अपने स्वरूप में, स्वधन- स्वनारी मूल स्वरूप मे अपने मूल चरित्र नैतिकता का मूल स्वरूप है।

(1) मूल्य :(1) संबंधो की पहिचान, विश्वास, मूल्यों का निर्वाह मूल्यांकन, परस्परता में तृप्ति को पाना

(2) चरित्र:- चरित्र का मतलब स्वधन, स्वनारी स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार से मतलब है परम्परा मे अर्थात आगे के संतानों मे मानवत्व को प्रकाशित करने योग्य क्षमता-योग्यता पात्रता को स्थापित करना है।

दिनांक 12-11-02

नैतिकता का तात्पर्य :-

तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग-सुरक्षा करना । इस विधि से हर मानव व्यवस्था में जीने योग्य होता है। हर नर-नारी समझदारी पूर्वक परिवार में स्वयं व्यवस्था में होने का प्रमाण समाधान-समृद्धि के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

① समझदारी पूर्वक समाधान हर नर-नारी में प्रमाणित होना है।

② प्रत्येक नर-नारी परिवार में आवश्यकता से अधिक उत्पादकता के लिये भागीदारी/फलत: समृद्धि का प्रमाण है।

मानवीय प्रतिभा का स्वरूप अथवा मानवीयता पूर्ण प्रतिभा-स्वरूप :-

6 बिन्दुओं में :-

① स्वयं में विश्वास

② श्रेष्ठता का सम्मान

③ प्रतिभा में विश्वास (ज्ञान-विज्ञान-विवेक)

(4) अस्तित्व में विश्वास
(5) व्यवहार में सामाजिक होने का विश्वास
(6) व्यवसाय (उत्पादन कार्य में) परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना।

(1) ज्ञान :-

अपने स्वरूप में अर्थात जागृत मानव में अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान, जीवन-ज्ञान इन तीनों का अवधारणा और अनुभव होने से ज्ञान कहलाता है। अथवा ज्ञान सम्पन्नता कहलाता है।

2 विज्ञान :-

मानवीय लक्ष्य अर्थात समाधान पूर्ण समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व के प्रतीक के प्रमाणित होने के लिये दिशा निर्धारित विवेक ज्ञान ही विज्ञान है।

③ विवेक :-

सर्व मानव लक्ष्य अर्थात समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व प्रमाण ही मानव लक्ष्य है। इसको भले प्रकार से पहिचान पाना है। इसी का नाम विवेक-ज्ञान है अथवा विवेकात्मक ज्ञान है।

(ii) श्रेष्ठता का सम्मान :-

इसी प्रकार ज्ञान सम्पन्न व्यक्तियों का अखण्ड समाज में भागीदारी होने की समझ होती ही है। फलस्वरूप ऐसे लोगों का सम्मान करना बनता है।

(iii) प्रतिभा :-

प्रतिभा अर्थात ज्ञान-विज्ञान-विवेक संतुलन में विश्वास —

व्यक्तित्व में विश्वास :- मानवीय पूर्ण व्यवहार, मानवीयता पूर्ण आहार, मानवीयता पूर्ण विहार में स्पष्ट

प्रमाण। यह प्रतिभा के अनुरूप व्यक्तित्व में विश्वास।

व्यवहार में सामाजिक :-

परिवार में न्याय सम्पन्नता और अखण्ड समाज-सूत्र के रूप में प्रमाणित होना व्यवहार में सामाजिक होने का मतलब है।

(6) उत्पादन में स्वावलम्बन :- उत्पादन में स्वावलम्बन ऐसे समस्त परिवार की आवश्यकता निश्चित रहती ही है। उस निश्चय के अनुसार जो आवश्यकता स्पष्ट होती है उससे अधिक उत्पादन के लिये परिवार के सभी सदस्य भागीदारी करते हैं।

—o—

अछोटी परिवार के साथ
-:- गोष्ठी अछोटी मे :-

दिनांक 8 और 9 तारीख रात्रि 8 आठ बजे से 10 बजे तक जीवन सहज दस क्रिया का अन्तर सम्बन्ध और अनुभव मूलक व अनुभव व अनुभव गामी प्रक्रिया व प्रमाण परंपरा स्पष्ट होने के अर्थ मे अछोटी मे स्थित अंजनी अग्रवाल के निवास में सम्पन्न हुआ :-

— जिसमें जीवन व नव शरीर का स्पष्ट अध्ययन के उपरान्त :-
- चित्त में चिन्तन स्पष्ट -
- चिन्तन मे अर्थ -
- अर्थ अस्तित्व मे वस्तु -
- वस्तु का बोध अनुभव -

अनुभवमूलक प्रमाण - बोध - संकल्प
— " — संकल्प का चिन्तन - चित्रण
— " — चित्रण का न्याय-धर्म-सत्य पूर्ण तुलन
— " — तुलन का अनुभव

18 नवम्बर 2002

रायपुर से अछोटी पहुँचे
दिनांक 18/11/2002
दिन शुक्रवार

हर जागृत मानव परिवार उपकार प्रवृत्ति सहित कार्य-व्यवहार विधि से प्रमाण है। इस बिन्दु में पारंगत ~~प्रमाण~~ पारंगत होने का सत्यापन। हर ~~मानव~~ जागृत मानव परिवार अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या है। इस बिन्दु में प्रमाण व पारंगत होने का सत्यापन।

सम्मेलन में आये मेधावी विद्वानों से सहमति सत्यापन पक्ष के सहज बिन्दु ये

(1). अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन से जुड़े वांग्मय के रूप में "मध्यस्थ-दर्शन" सहअस्तित्व वाद शास्त्र योजनायें प्रस्तुत है।

सहमति — असहमति

यदि हां — पारंगत प्रमाण होने का सत्यापन

(2) मध्यस्थ दर्शन सहज लोक शिक्षा विधा
विधा में पारंगत प्रमाण होने का सत्यापन

(3) अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित ज्ञान-
विवेक-विज्ञान सम्पन्न होना, पद
प्रतिष्ठा सम्पन्न होना प्रतिपादित
है।

सहमति असहमति
यदि हां पारंगत प्रमाण होने का सत्यापन

(4) हर मानव अनुभव मूलक विधि से जागृति सहज
प्रमाण है। अस्तु प्रमाण होने मे-से-के लिये
सत्यापन

(5) मानवीय शिक्षा संस्कार योजना मे
समझदारी ईमानदारी भागीदारी सम्पन्न
होना स्पष्ट है। उस बिन्दु में पारंगत
प्रमाणित होने का सत्यापन।

19-10-2002
दिन शनिवार

आज अकोटी में सम्मेलन

(6) हर जागृत मानव परिवार समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व सहज प्रमाण में होना पाया जाता है। अस्तु प्रमाणित होने का सत्यापन।

जो पारंगत हो गये हैं — उनका सत्यापन स्वाभाविक होने की स्वीकृति और उसकी पुष्टि में सूची तैयार करने पर बल।

दिनांक 18-10-2002 से सम्मेलन में आये सभी विद्वानों ने :- जीवन-विद्या 'मध्यस्थ दर्शन' सहअस्तित्ववादी व्यवस्था सहज महिमा व प्रतिष्ठा के प्रति विश्वास जताये, स्वयंस्फूर्त निष्ठा व्यक्त किये।

20 अक्टूबर
2002

अछोटी में सम्पन्न
सम्मेलन में आये हुए
बन्धुओं के शोध और कार्य-क्रम
मे संकल्पो को दुहराये।

मानवत्व
अखण्ड समाज
सार्वभौम व्यवस्था
मानवीय शिक्षा
मानवीय संविधान
मानवीयता पूर्ण आचरण सहज
आवश्यकता स्वीकृति

पुनः सम्मेलन अमरकन्टक मे
होने का निर्णय के साथ
अपने स्थानों के लिये
प्रस्थान

20-10-2002
रविवार

दूसरी डायरी
२ नवम्बर
२००२
~~२ अक्टूबर~~

दिसम्बर २ - २००२
2-12-2002
दिन - सोमवार

श्री पवन गुप्ता एवं श्रीमती अनुराधा

- स्वयं - स्वयं का होना
  स्व - अपनाना प्राप्त करना। प्रमाणित अर्थात् व्यवस्था में होना

- सम्बन्धों में निर्वाह का फलन विश्वास है।
- आधार बिन्दु होता ही है। उसे स्पष्ट करना आवश्यक है। अधार बिन्दु ही समझने। समझाने का प्रस्थान बिन्दु है।
- मानव में विशालता समाई है। इसको प्रमाणित करना है। मूल्यों से विशालता की ओर जाते हैं।
- प्राप्त को या जो उपलब्ध है उसे अनुभव करना है।
- ऊर्जा सम्पन्नता वश ही मानव में ज्ञान मूल्य मूल्यांकन ~~क~~ तृप्ति बिन्दु का

होता
का अनुभव होना है।

- ज्ञान, मूल्य मूल्यांकन, तृप्ति बिन्दु में अनुभव होने से सुख है। वही मूल्यों में घटित होता है।
- मूल्य व्यापक है
- अस्तित्व में अनुभव-मूल्यों के रूप में प्रमाण।

मानवत्व में 'स्व' ज्ञान-विज्ञान-विवेक सम्पन्नता है।

ज्ञान :- ① सहअस्तित्व रूपी दर्शन ज्ञान
② चैतन्य इकाई रूपी जीवन-ज्ञान'
③ मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान

विज्ञान :- लक्ष्य तक पहुँचने की विधि।
विवेक :- मानव लक्ष्य और जीवन मूल्य की पहचान।
मानवलक्ष्य :- समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व
जीवन मूल्य :- सुख-शांति-संतोष आनन्द

- तीन प्रकार की क्रियायें - (i) भौतिक (ii) रसायनिक (iii) जीवन-क्रियायें
- भौतिक रसायनिक क्रियायें बदलती रहती है। उन्हे निरपेक्ष मान लिया गया - भ्रम वश।

जीवन क्रिया :- जीवन-क्रिया निरन्तर है - एक जैसी है उसे भ्रम वश सापेक्ष मान लिया गया।

- परिणाम बदलते रह सकता है, प्रमाण निरन्तर है।
- निश्चयता निष्कर्ष के अर्थ में ही है।
- पदार्थ-प्राण- और जीवावस्था मे न्याय का अर्थ (दृष्टि का अर्थ) नियम, नियंत्रण, सन्तुलन में है।

नियंत्रण यांत्रिक नही प्राकृतिक है यानी प्रक्रिया में।

मानव की दृष्टि :- मानव की दृष्टि न्याय- धर्म- सत्य है।

सत्ता :- सत्ता होने के अर्थ में निरन्तरता। सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति

- शब्द से वस्तु को, क्रिया को, फल परिणाम को स्थिति-गति को इंगित करवाते हैं।
- स्थिति बोध होने पर व्यापक का भी स्थिति बोध।
- व्यापक में गति बोध नहीं होता - क्रिया शून्य। व्यापक में हर वस्तु की गति है।
- अज्ञात और आवश्यकता की दूरी से सवाल की उत्पत्ति है।
- <u>समाधान</u> :- समाधान पूर्णता के अर्थ में अवधारणा अनुभव है।
- इकाई + वातावरण = इकाई सम्पूर्ण = व्यवस्था
- हर इकाई सम्पूर्ण - अपनी से बड़ी व्यवस्था में भागीदारी।
- इकाई सम्पूर्णता = निश्चित आचरण [ऊर्जा-सम्पन्नता - क्रियाशीलता - नियंत्रण = तीनों का मिलन]
- सहअस्तित्व में बल सम्पन्नता, ऊर्जा-सम्पन्नता का रहने का प्रमाण परमाणु

के रूप में स्वचालित क्रिया का होना।

- कारण, गुण, गणित विधि से भाषा का प्रयोग है।
- वस्तु, क्रिया, फल-परिणाम - इन्हीं चार का नाम ही शब्द है।
- कार्य : कारण, फल परिणाम
- हर होने का ~~साक्षात्कार~~ स्वीकार्य होना साक्षात्कार है।
- होने की ररकता, उपयोगिता का बोध।
- जानना - मानना पर अनुभव ?
- अधार को जानना, लक्ष्य को जानना, कार्य क्रम तय करना।
- क्रिया स्थिति-गति का संयुक्त स्वरूप।
- मनाकार को साकार करने की प्रवृत्ति को मनः स्वस्थता पूर्वक सन्तुलित/नियंत्रित करना बनता है।
- आवश्यकता के अर्थ में प्रवृत्ति होती है - स्वयं से अस्तित्व तक प्रयोजन के आधार पर विश्वास बनेगा।

— <u>समय या काल</u> :- क्रिया की अवधि
क्रिया की अवधि में वस्तु की लम्बाई-चौड़ाई, मोटाई, चारों ओर ही अवधित होती है।

कल्पनाशीलता और कर्म स्वतंत्रता के आधार पर प्रयोग होते हैं। प्रयोग का प्रमाण क्या होगा। यह महत्व पूर्ण प्रश्न है। प्रमाण यन्त्र में होगा या मनुष्य में। यही बड़ा shift होता है। यंत्र प्रमाण से मनुष्य प्रमाण।

— मनुष्य में प्रयोजन ही प्रमाण होगा।

प्रयोजन :- ① मानवीयता - जिससे अखण्ड समाज प्रमाणित होता है।
② व्यवस्था :- जिससे सार्वभौम व्यवस्था प्रमाणित होती है।

— हमारी कामना, प्रक्रिया, प्रमाण तीनों व्यक्त होते रहे — कर्म व्यवहार

<u>दर्शन</u> :- सह अस्तित्व में अनुभव की

अभिव्यक्ति - सूत्र आधार।

- शास्त्र :- जीने की व्याख्या - प्रमाण
- वाद :- सह अस्तित्व सहज तर्क (दर्शन और शास्त्र को जोड़ने के लिये)

योजना :-
कार्यक्रम

— o —

2 दिसम्बर से 10 दिसम्बर 2002 तक रहे। ऊपर लिखे सभी मुद्दों पर अनुक्रम विधि से गोष्ठी सम्पन्न हुई।

नोट : दूसरी डायरी से
नवम्बर के 2 से नवम्बर 6 तक जो कार्य गोष्ठी सम्पन्न हुई थी उसका विवरण इसमें समाहित है।
तारीख (2-11-002 से 6-11-002)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

15 नवम्बर - 2002

• — विशिष्ट ज्ञान = विज्ञान

• — जिसका प्रतिपादन का प्रावधान न हो उसकी व्याख्या मानसिक और संवेदनात्मक प्रतीकों के अवलम्बन से करने/देने/कहने/प्रयोगात्मक मे हो = विज्ञान

• — मानसिक = Abstract → पहचान समग्र से संवेदना के हिस्से को विलग के बचा शेष —

• — संवेदना = ज्ञान/इन्द्रियों के अन्तर्गत हुये पहिचान

पवित्र कुमार चौधरी के द्वारा दी गई उक्त परिभाषाये हैं।

जिसके प्रतिपादन का प्रावधान न हो ऐसी वस्तुओं की पहिचान रहती

है या नहीं।

व्याख्या का आधार क्या है?

प्रतिपादन का प्रावधान न हो तो संवेदनाओं के आधार पर की व्याख्या अनुकूलता-प्रतिकूलता के चक्कर में रहेगी। तब निश्चय कैसे होगा।

संवेदनाओं के आधार पर मानव की पहिचान निर्विवाद होगा या नहीं।

P.T.O. →

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

13 दि० 2002

आज दिनांक 13-12-2002 शुक्रवार को मध्याह्न बेला में श्री व श्रीमती आर. आर. गौड़ आई. आई. टी. दिल्ली से मूल्य शिक्षा का (मानवीय शिक्षा संस्कार) कार्य-क्रम रूपी पाठ्य क्रम कार्य गोष्ठी के लिये पधारे हैं।

मुद्दे

मूल्य शिक्षा पाठ्य क्रम सम्बन्धी चर्चा में निम्न बिन्दुओं को मुख्य रूप से मैंने समझा — ऋषि राज गौड़ ~~पहले~~ पहला पाठ्य-क्रम कोर्स (अध्याय)

• — मूल्य शिक्षा की आवश्यकता एवं अवधारणा।

1. — सब मनुष्य मात्र में निरन्तर सुख शान्ति की अर्थात् समाधान-समृद्धि की चाह है। इस पर ध्यानाकर्षण दिया।

निर्धारण।

2 — इसके लिये समस्त मानव अपने अपने ढंग से प्रयास रत हैं। हमारे सभी प्रयत्न इसी आशा में हैं।

3 — इस संदर्भ में वर्तमान जीवन शैली की समीक्षा की जाय तथा निष्कर्ष के रूप में यह व्याख्या करना किया जाय कि जो भी तथा-कथित विकास-प्रक्रिया चल रही है मानव उससे उत्तरोत्तर समस्याओं में घिरता जा रहा है, धरती विनाश की ओर जा रही है तथा मानव अपनी परस्परता में संघर्ष-अशान्ति-दुख के चक्र में फँसते जा रहा है। उससे निकलने का उपाय क्या है? विधि-प्रक्रिया क्या है?, कहां गलती है? यह समझना नितान्त आवश्यक हो गया है।

4 — यह समझने के लिये हमे मानव: सुख-शांति

की चाह को ही सही रूप से समझना होगा। मानवीय लक्ष्य को ठीक परिभाषित करना होगा।

उपरोक्त स्थिति का एक मात्र कारण यह है कि मानव स्वयं को समझने में भ्रमित है। इन्द्रियगत संवेदनात्मक सुख के भास-आभास को ही निरन्तर सुख मानकर भ्रमित है, यही समस्त दुःख का कारण है।

5. — निरन्तर सुख अथवा समाधान का एक मात्र मार्ग स्वयं से लेकर अस्तित्व में व्यवस्था को सही-सही पहिचानना है तथा उसके अनुरूप जीना है। मानव-लक्ष्य के रूप में समाधान-समृद्धि, अभय एवं सहअस्तित्व को समझना, इसे प्रमाणित करना है। यही समझदारी अर्थात ज्ञान-विवेक-विज्ञान अर्थात संज्ञानशीलता में जागृति है, मानव इसके लिये समर्थ है तथा

यही गंतव्य है इसी में निष्ठा को स्थापित करना है।

6. — उपरोक्त समझदारी की स्थापना ही मूल्य-चरित्र-नैतिकता-शिक्षा बनाम मानवीय शिक्षा संस्कार है, इसके लिये प्रथम चरण अध्ययन ही है। अध्ययन करने वाला मानव ही, अध्ययन कराने वाला समझा हुआ मानव ही है। ~~अध्ययन~~ अध्ययन की वस्तु है स्वयं से लेकर समस्त अस्तित्व में ही सह अस्तित्व एवं व्यवस्था है।

यह व्यवस्था के (6) स्तरों पर अध्ययन कर सकते हैं :-

(1) स्वयं में।
(2) शरीर के साथ।
(3) परिवार में।
(4) समाज।
(5) ~~स~~ प्रकृति में।
(6) अस्तित्व मे।

7. — प्रयोजन मे निम्न सूत्र सहायक हैं:—

* प्रयोजन है जागृति
* जीवन सहज नित्यता, शरीर की नश्वरता व व्यवहार के नियम को पहिचानना।
* जीवन मूल्य हैं:- सुख-शान्ति-संतोष आनन्द।
* व्यवस्था, सह अस्तित्व अथवा ~~सफलता~~ उपयोगिता-पूरकता समाधान के संदर्भ में कसौटियाँ हैं, उभय तृप्ति एवं अभय समृद्धि।
* प्रतिभा एवं व्यक्तित्व मे संतुलन ~~संज्ञानीयता मे~~
* संज्ञानशीलता, संज्ञानीयता के नियंत्रण में संवेदनशीलता का समन्वय
* प्रत्येक क्रिया-कलाप मे लक्ष्य

प्रमुख रहना चाहिए।

8. —— विज्ञान को विवेक सम्मत होना है लक्ष्य मूलक होना है। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि विज्ञान-तकनीकी का क्षेत्र सीमित है। वस्तुओं की उपयोगिता अथवा कला मूल्य के संवर्धन के अर्थ में ही। शेष सारी शिक्षा मूल्यों के अर्थ में ही है।

जीवन-मूल्य
मानव-मूल्य
सम्बन्धो मे स्थापित-मूल्य
शिष्ट मूल्य सहज —— अध्ययन

—o—

P.T.O.

दिनांक 14-12-02

कोर्स 2 :- मानवीयता पूर्ण आचरण
(इन्जिनियरिंग के विद्यार्थियों के लिये)

① — मानवीयता पूर्ण आचरण अर्थात् मूल्य - चरित्र - नैतिकता

② — कोई भी नर - नारी सर्व प्रथम मानव है। तत्पश्चात किसी भी ~~व्यवस्था~~ व्यवसाय मे विशेषज्ञ जैसे इंजिनियर, डॉक्टर आदि

③ — अतः सर्व प्रथम हमे मानवीयता पूर्ण आचरण को समझना है तदनन्तर ही उत्पादन व्यवसाय - विशेष के संदर्भ में मूल्य - चरित्र - नैतिकता को ~~व्याख्~~ व्याख्यायित किया जा सकता है।

④ मानवीयता पूर्ण आचरण क्या है? इसका विस्तृत विवेचन

(5) —— सर्व प्रथम तो यह समझना है कि मूल्यों का धारक-वाहक मानव ही है। स्वयं से लेकर अस्तित्व सहज व्यवस्था एवं सह-अस्तित्व की पहिचान कर ही मूल्य एवं संबंधों की ठीक समझ हो सकती है। मानवीयचरित्र तथा नैतिकता का ज्ञान हो सकता है

(6) —— समझदारी - ईमानदारी - जिम्मेदारी - भागीदारी मानवीयता पूर्ण आचरण के आधार स्तम्भ है।

(7) —— समाधानित मानव मानसिकता से ही सर्व शुभ के अर्थ में मूल्यों का मूल्यांकन उत्पादित वस्तुओं की उपयोगिता - सदुपयोगिता के अर्थ में मूल्यांकन संभव है।

8 —— समाधानित मानव मानसिकता ही मूलतः अखण्ड समाज व सार्वभौम व्यवस्था का आधार व प्रमाण है।

9. —— तन-मन-धन रूपी अर्थ की सुरक्षा एवं सदुपयोग ही नैतिकता है।

10 —— सर्व मानव के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार तथा ~~मन~~ मानवेत्तर प्रकृति के साथ नियम-नियंत्रण के अर्थ में।

11 कार्य:- इंजिनियरिंग तकनीकी शिक्षा है जो उत्पादन में गति और श्रेष्ठता के लिये उपयोगी है।

12 —— इंजिनियरिंग के सभी क्रिया-कलापों को उपरोक्त संदर्भ में ही मूल्यांकित करना होगा, इसी आधार पर कसौटी ~~बनी~~ होगी।

13 —— कुछ उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण

दिनांक 15 - 12 - 2002

कोर्स - 3 स्थायी- चेतना
स्थायी- जागृति

व्यवस्था
स्थायी (विकास) की अवधारणा
एवं ~~रूप~~ स्वरूप

① — सर्व प्रथम यह स्पष्ट होना है कि 'स्थायी विकास' से हमारी अपेक्षा क्या है? क्या निम्न लिखित अपेक्षा से हमारी सहमति है? इसे ठीक तरह से जाँच लें।

'स्थायी विकास' से यही अपेक्षा है कि इस धरती पर सब लोग समाधान - सुख समृद्धि पूर्वक, शान्ति पूर्ण ढंग से जी सके। भौतिक आवश्यकतायें निरन्तर पूरी हो सके, स्रोत के रूप में प्रकृति भी समृद्ध बनी रहे तथा सभी का समाधान सहज तृप्ति पूर्वक जीना संभव हो सके तथा इसकी परंपरा बन सके ताकि आनेवाली पीढ़ियाँ भी

सहजता से इसी प्रकार जी सके।

(2) — इस अपेक्षा के संदर्भ में विगत तथा वर्तमान विकास-धाराओं की समुचित समीक्षा हो तथा निष्कर्ष के रूप मे इन सभी माडलों की नितान्त अनुपयुक्तता समझ में आनी चाहिए।

(3) मानवीय व्यवस्था अर्थात् अखण्ड समाज उपरोक्त अपेक्षा के लिये उपयुक्त माडल है इसमे निष्ठा स्थापित करना।

(4) मानवीय व्यवस्था (अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था) की विस्तृत व्याख्या, दश सोपानों में व्यवस्था का स्वरूप

(5) मानवीय व्यवस्था की मूल इकाई जागृत मानव परिवार ही है तथा स्वायत्त इकाई के रूप में ग्राम स्वराज्य व्यवस्था।

(6) दश सोपानीय —

मानवीय व्यवस्था में कार्य-क्रम गतिरूप में निम्न है :-

(1) मानवीय शिक्षा संस्कार
(2) न्याय सुरक्षा
(3) उत्पादन कार्य (स्वावलम्बन)
(4) विनिमय कोष
(5) स्वास्थ्य संयम

(7) —

ग्राम स्वराज्य को पुष्ट करने के लिये समुचित ग्रामोद्योग, ग्राम-शिल्प, पशु-पालन, कृषि, ऊर्जा आदि विकसित करना होगा।

शोध

साम्य बिन्दुवें :-

मान	शोध के बिन्दु - प्रत्येक शोध मानवीय लक्ष्य मूलक ही हो

- मानवीय व्यवहार में, सुगमता के अर्थ में।
- शिक्षा-संस्कार में सुगमता के अर्थ में।
- स्वास्थ्य-संयम में सुगमता के अर्थ में।
- उत्पादन कार्य में सुगमता के अर्थ में।
- न्याय-सुरक्षा में सुगमता के अर्थ में।
- मानवेत्तर प्रकृति में सन्तुलन में मानवीय योगदान को सुगम बनाने के अर्थ में।
- विनिमय कार्य में सुगमता के अर्थ में।

निम्न बिन्दुओं को
पहिले ~~वाक्य~~ समझना, सत्य को जानना

Continued →

निम्न बिन्दुओ को
पहिले वाक्य समझा, सत्य जाना

① —— समझने के आधार रुप मे अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन दर्शन वाद शास्त्र उल्लेख

② —— अवधारणा के तीसरेवे बिन्दु में स्वयं को जीवन व शरीर का संयुक्त रुप मे मानना (मानव)

③. अवधारणा में ज्ञान-विवेक-विज्ञान का समन्वय अवधारणा नही है।
छटवे बिन्दु में

④ अवधारणा कोर्स मे सातवें बिन्दु में
संज्ञानीयता में संवेदनाये नियंत्रण।

स्वयं मे विश्वास
श्रेष्ठता का सम्मान

प्रतिभा में निष्ठा
व्यक्तित्व में सन्तुलन
व्यवहार में सामाजिक
व्यवसाय में स्वालम्बन

---

(5) 3 नीरस्याश कोर्स के अन्त में
शोध प्रसंग
विनिमय कार्य में सुगमता के
लिये।

नागराज जी के साथ

(1) शिक्षा-शिक्षण मूल्य शिक्षा - नैतिक शिक्षा - चरित्र-शिक्षा, लोक शिक्षा सहअस्तित्व के साथ रहेगा या नहीं?
यदि रहेगा तब :—
(2) 'मूल्य पूरा या अधूरा है ?
(3) सम्पूर्णता में या अंश में ?
(4) मानव सम्पूर्णता के साथ या अंश के साथ?
(5) मानव अपनी सम्पूर्णता में मूल्य व मौलिक है या अधूरे में ?

(6) हर मानव को ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज सम्मत विचार, तर्क संगत निर्णय योजना, कार्य योजना के रूप में (पहिचानता है या) सर्व मानव की सम्पूर्ण आवश्यकता या मानवीयता के लिये? या संवेदनाओं के लिये है ?

(7) हर मानव मानव संस्कृति-सभ्यता-विधि-व्यवस्था मूल्य शिक्षा का लक्ष्य होगा या रोटी-कपड़ा-मकान चींटी-हाथी जीता हुआ है। क्या मानव इनसे घटिया है ?

यदि हाँ
उन्हें मारे कैसे ?
यदि इससे अन्य प्रमाण कहां है ?

(8) मानव जाति सहज आवश्यकता है या मनोगत वादी ?

(9) हर-नर-नारी सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न होना है या नहीं ?

(10) समाधान पूर्वक हर मानव सुखी होना सार्वभौम रूप में पहिचानना निर्वाह करना होना या नहीं ?

(11) मानव संविधान को मानव-मूल्य-चरित्र नैतिकता के आधार पर सार्वभौम रहेगा या नहीं ?

(12) अखण्डसमाज अथवा मानव समाज के रूप में प्रमाणित होना या नहीं ?

23/8/04
अमरकंटक

~~[illegible]~~

मेरा, प्रवीण सिंह (दिल्ली), का अमरकंटक 20/8/04 को आना हुआ। यहाँ पर 29/8/04 तक प्रवास रहेगा।

आने के उद्देश्य इस प्रकार हैं:

(1) सहअस्तित्ववाद – एक परिचय नामक एक लघुपुस्तिका मैंने पिछले वर्ष लिखी थी और बाबा को भेजी थी। उन्होंने उसे साथ पढ़ कर कुछ सुझाव / जाँचने इत्यादि का मन्तव्य व्यक्त किया था। यह कार्य करना है।

(2) अध्ययन (मध्यस्थ दर्शन का) के दौरान कुछ प्रश्नों का स्पष्टीकरण

(3) I.I.T दिल्ली मे मध्यस्थ दर्शन के आधार पर चल रहे प्रयास पर Dr R.R. Gaur के साथ मैंने भी कुछ कार्य किया था। Dr Gaur की इच्छा थी कि अभी तक तैयार की गई रूपरेखा (courses की) से बाबा को अवगत करा देना।

I.I.T Delhi मे मूल्य शिक्षा कार्य पर update

1. तीन कोर्स Engineering के विद्यार्थियों के लिए बनाने का लक्ष्य है।

2. अभी तो courses इस उद्देश्य से बनाए जा रहे हैं कि यदि कोई विद्यार्थी इनमें से एक कोर्स भी करता है तो उसे मध्यस्थ दर्शन से परिचय हो जाता है और उसे इस विचारधारा की ओर ध्यानाकर्षण हो पाता है।

3. पहला कोर्स Foundation course in Human Values
दूसरा कोर्स Engineering Ethics
तीसरा कोर्स Holistic Development & Technologies

4. सभी कोर्स को (मोटा मोटी) निम्न Modules मे बाँट कर पढ़ाने का उद्देश्य है
- Introduction & need for the course
- assessment of prevailing view on the topic
- need for an alternative, and an assessment of contemporary efforts on the subject
- Presenting an alternate worldview i.e Sahaastitvavaad मध्यस्थ दर्शन
- Implications of मध्यस्थ दर्शन on the topic

- Practical and strategies for enacting/implementation in the direction of मध्यस्थ दर्शन
- Course Roundup.

~~II. Presentation Course in Human Values~~

5.
सभी कोर्स मे मूलत: सहअस्तित्ववाद की पूर्ण वस्तु से परिचय करा देने का उद्देश्य है। परंतु शुरुआती चर्चा उस कोर्स के Topic से जोड़ कर शुरु होगी। वर्तमान सोच, जीने के तरीको मे उन समस्याओं का हल ना संभव हो पाने की ओर ध्यान इंगित कराया जाएगा। इससे एक विकल्प की आवश्यकता उभरेगी। इस विकल्प के रूप मे सहअस्तित्ववाद की प्रस्तुति रहेगी।
- मनुष्य की मूल चाहना (निरंतर सुख) की ओर ध्यान इंगित कराया जायेगा
- अस्तित्व मे इस चाहना की पूर्ति की एक निश्चित विधि का होना इंगित कराया जाएगा
- इस निश्चित विधि की पहचान अस्तित्व सहज

व्यवस्था के अध्ययन से (अर्थात जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन, मानवीयता पूर्ण आचरण) ही स्पष्ट होती है। इस व्यवस्था का अध्ययन कराया जाएगा।

- उस specific कोर्स में सहअस्तित्ववाद से निकलते नजरिए, जीने की विधि पर स्पष्टता, विधि प्रस्तुत करा जाएगा।

26/8/04

लघु पुस्तिका बाबा के साथ पढ़ी। बाबा ने कई सुझाव (corrections के) दिये।
इन्हे संलग्न कर के ~~अग~~ अगला संस्करण छपाने के बाद एक प्रति बाबा को भेजने की बात हुई है।